दलाई लामा

प्रलिमि्स के लयि:

नरि्वासन में तबि्बती सरकार, बौद्ध धर्म, वास्तवकि नयिंत्रण रेखा, मैकमोहन रेखा।

मेन्स के लयि:

भारत-चीन संबंधों पर दलाई लामा और तबि्बत का प्रभाव।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में भारतीय सैनकिों की एक छोटी टुकड़ी के अंतमि जीवति सदस्य, जो वर्ष 1959 में तबि्बत से भागते समय दलाई लामा को बचाकर ले गए थे, की मृत्यु हो गई है।

प्रमुख बदिु

- **परचिय:**
  - दलाई लामा तबि्बती बौद्ध धर्म की **गेलुग्पा परंपरा** से संबंधति हैं, जो तबि्बत में सबसे बड़ी और सबसे प्रभावशाली परंपरा है।
  - तबि्बती बौद्ध धर्म के इतहिास में केवल 14 दलाई लामा हुए हैं और पहले तथा दूसरे दलाई लामाओं को मरणोपरांत यह उपाधि दी गई थी।
    - 14वें और वर्तमान दलाई लामा 'तेनजनि ग्यात्सो' हैं।
  - माना जाता है कि दलाई लामा अवलोकतिेश्वर या चेनरेज़गि, करुणा के बोधसित्व और तबि्बत के संरक्षक संत के प्रतीक हैं।
    - बोधसित्व सभी संवेदनशील प्राणयिों के लाभ के लयि बुद्धत्व प्राप्त करने की इच्छा से प्रेरति प्राणी हैं, जनि्होंने मानवता की मदद के लयि दुनयिा में पुनर्जन्म लेने की प्रतबिद्धता जताई थी।
- **दलाई लामा का अनुरक्षण:**
  - 1950 के दशक में चीन का राजनीतकि परदृिश्य बदलना शुरू हुआ।
  - तबि्बत को आधकिारकि रूप से चीनी नयिंत्रण में लाने की योजनाएँ बनाई गईं लेकनि मार्च 1959 में तबि्बती, चीनी शासन को समाप्त करने की मांग को लेकर सड़कों पर उतर आए। चीनी पीपुल्स रपिब्लकि के सैनकिों ने वदि्रोह को कुचल दयिा और हजारों लोग मारे गए।
  - दलाई लामा 1959 के तबि्बती वदि्रोह के दौरान हज़ारों अनुयायियों के साथ तबि्बत से भारत भाग आए, जहाँ उनका स्वागत पूर्व भारतीय प्रधानमंत्री, जवाहरलाल नेहरू ने कयिा, जनि्होंने उन्हें धर्मशाला (हमिाचल प्रदेश) में 'नरि्वासन में तबि्बती सरकार' बनाने की अनुमति दी।
- **दलाई लामा को चुनने की प्रक्रयिा:**
  - पुनर्जन्म के सद्धिांत में बौद्ध धर्म के बाद वर्तमान दलाई लामा को बौद्धों द्वारा उस शरीर को चुनने में सक्षम माना जाता है जसिमें उनका पुनर्जन्म होता है।
  - वह व्यक्ति जब मलि जाता है तो अगला दलाई लामा उसे बना दयिा जाता है।
  - बौद्ध वदि्वानों के अनुसार, यह गेलुग्पा परंपरा के **उच्च लामाओं और तबि्बती सरकार की ज़मि्मेदारी** है कि वे पदाधकिारी की मृत्यु के बाद अगले दलाई लामा की तलाश करें और उन्हें खोजें।
  - यदि एक से अधकि उम्मीदवारों की पहचान की जाती है, तो वास्तवकि उत्तराधकिारी एक सार्वजनकि समारोह में अधकिारयिों और भक्षिुओं द्वारा बहुत से लोगों को आकर्षति करते हुए पाया जाता है।
  - एक बार पहचाने जाने के बाद सफल उम्मीदवार और उसके परविार को ल्हासा (या धर्मशाला) ले जाया जाता है,जहाँ बच्चा आध्यात्मकि नेतृत्त्व की तैयारी के लयि बौद्ध धर्मग्रंथों का अध्ययन करता है।
  - इस प्रक्रयिा में कई वर्ष लग सकते हैं, **14वें (वर्तमान) दलाई लामा** को खोजने में चार वर्ष लग गए।
  - यह खोज आमतौर पर तबि्बत तक ही सीमति है, हालाँकि वर्तमान दलाई लामा ने कहा है कि उनका पुनर्जन्म नहीं होगा और यदि होगा तो यह चीनी शासन के तहत देश में नहीं होगा।

तबि्बत और दलाई लामा: भारत-चीन संबंधों पर प्रभाव

- **भूमिका:**
  - सदियों से, तिब्बत भारत का वास्तविक पड़ोसी था, क्योंकि भारत की अधिकांश**सीमाएँ और 3500 किमी LAC (वास्तविक नियंत्रण रेखा)** तिब्बती स्वायत्त क्षेत्र के साथ है न कि शेष चीन के साथ।
  - 1914 में चीनियों के साथ तिब्बती प्रतिनिधियों ने ब्रिटिश भारत के साथ शिमला सम्मेलन पर हस्ताक्षर किये जिसमें सीमाओं का निर्धारण किया गया था।
  - हालाँकि **वर्ष 1950 में चीन द्वारा तिब्बत पर पूर्ण रूप** से कब्ज़ा करने के बाद चीन ने उस कन्वेंशन और मैकमोहन लाइन को खारिज़ कर दिया, जिसने दोनों देशों को विभाजित किया था।
  - **इसके अलावा वर्ष 1954 में भारत ने चीन के साथ तिब्बत को "चीन के तिब्बत क्षेत्र" के रूप में मान्यता देने के लिये एक समझौते पर हस्ताक्षर किये थे।**
- **वर्तमान परिदृश्य:**
  - दलाई लामा और तिब्बत भारत तथा **चीन के संबंधों के बीच प्रमुख अड़चनों** में से एक है।
  - चीन दलाई लामा को अलगाववादी मानता है, जिनका तिब्बतियों पर अधिक प्रभाव है।
  - भारत **वास्तविक नियंत्रण रेखा** पर चीन की निरंतर आक्रामकता का मुकाबला करने के लिये तिब्बती कार्ड का उपयोग करना चाहता है।
  - भारत और चीन के बीच बढ़ते तनाव की स्थिति में भारत की तिब्बत नीति में बदलाव आया है। नीति में यह बदलाव, सार्वजनिक मंचों पर दलाई लामा के साथ सक्रिय रूप से प्रबंधन करने वाली भारत सरकार को चिह्नित करता है।
  - भारत की तिब्बत नीति में बदलाव मुख्य रूप से प्रतीकात्मक पहलुओं पर केंद्रित है, लेकिन तिब्बत नीति के प्रति भारत के दृष्टिकोण से संबंधित कई चुनौतियाँ हैं।

आगे की राह

- वर्तमान में भारत में बसने वाले तिब्बतियों को लेकर एक कार्यकारी नीति (कानून नहीं) है।
- भारत की वर्तमान तिब्बती नीति भारत में बसने वाले तिब्बतियों के कल्याण एवं विकास हेतु महत्त्वपूर्ण है, परंतु यह तिब्बत के मुख्य मुद्दों का कानूनी समर्थन नहीं करती है। उदाहरण के लिये तिब्बत के विध्वंसकारकों द्वारा तिब्बत में स्वतंत्रता की मांग।
- अत: अब समय आ गया है कि भारत को भी चीन से निपटने में तिब्बत के मुद्दे पर अधिक मुखर रुख अपनाना चाहिये।
- इसके अलावा भारत में तिब्बत की एक युवा और अशांत आबादी निवास करती है, जो दलाई लामा के गुज़रने के बाद अपने नेतृत्व और कमान संरचना हेतु भारत के नियंत्रण से बाहर है। अत: भारत को ऐसी स्थिति से बचने की भी ज़रुरत है।

स्रोत: टाइम्स ऑफ इंडिया

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/dalai-lama-1